11 / 03 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सफलता के दो मुख्य आधार

➢➢ सेवा में वा स्वयं की चढ़ती कला में सफलता का मुख्य आधार है

➳ _ ➳ (1) एक बाप से अटूट प्यार...

➳ _ ➳ ज्ञानसूर्य ने ज्ञान की ज्योत जलाई...

→ इस ज्ञान की ज्योत को निहारते हुए

- मेरे अंतर्मन की ज्योति जग गई है..

→ मैं आत्मा ज्योति बन उड़ चलती हूँ

- परमधाम परमज्योति के पास..

→ परमज्योति से निकलती दिव्य किरणों की तेज को

- स्वयं में समा रही हूँ..

→ दिव्य किरणों से दिव्यता को ग्रहण कर

- दिव्य ज्योति बन रही हूँ..

→ इन तेजस्वी किरणों से तेजस्वी बन चमक रही हूँ..

→ ये दिव्य तेजस्वी किरणें मुझसे निकलकर

- चारों ओर फ़ैल रही हैं..

→ मेरे भाग्य का सितारा चमक रहा है..

→ मेरा जीवन धन्य-धन्य हो गया है..

➳ _ ➳ एक बाप से सर्व संबंधों का अनुभव कर रही हूँ..

→ मुझे ऐसा दिव्य जीवन देने वाला परमात्मा-

- मेरा पिता है..

- मेरा शिक्षक है..

- मेरा सतगुरु है..

- मेरा खुदा दोस्त है..

- मेरा साजन है..

→ मेरे सर्व संबंध सिर्फ और सिर्फ एक बाप से है..

→ सर्व संबंधों का अनुभव कर मुझे सर्व प्राप्तियां हो रही है..

- देहधारियों से अब कुछ भी पाने की चाह नहीं है..

- कहीं और जाने की मुझे जरूरत ही नहीं है..

→ ऐसा अविनाशी सम्बन्ध है

- जिसका कभी विनाश नहीं होता..

➳ _ ➳ सदा एक बाप के लव में लवलीन रहने वाली आत्मा हूँ..

→ रूहानी जादूगर ने ऐसा स्नेह का जादू फेरा है

→ उसके सिवाय अब मुझे कुछ भी दिखाई नहीं देता है-

- मेरे संकल्प में भी बाबा..
- मेरे बोल में भी बाबा..
- मेरे हर कर्म में भी बाप का साथ है..

→ मेरा एक बाबा से अटूट, अविनाशी प्यार है..

→ सर्व सम्बन्धों की प्रीत निभाकर मैं आत्मा

- हर कार्य में सफलता प्राप्त कर रही हूँ...

→ बाप समान रूहानी जादूगर बन गई हूँ..

- एक बाबा शब्द का जादू चलाकर
- सबको स्नेह में बांध रही हूँ..

➢➢ सफलता का दूसरा मुख्य आधार

➳ _ ➳ (2) हर ज्ञान की पाइंट के अनुभवी मूर्त होना...

➳ _ ➳ ज्ञानसागर ज्ञान किरणों की बरसात कर रहे हैं..

→ ज्ञान की एक-एक किरण मुझमें समा रही है..

→ मुझ आत्मा की सारी अज्ञानता मिट गई है..

→ मैं नालेजफुल आत्मा बन गई हूँ..

→ आत्मा, परमात्मा और ड्रामा का नालेज पाकर

- मैं त्रिकालदर्शी बन गई हूँ..

➳ _ ➳ ज्ञान की हर प्वाइंट को जीवन में यूज कर

→ अनुभवी मूर्त बन रही हूँ..

→ सदा साक्षीपन की स्टेज पर स्थित रहती हूँ..

→ इस कल्याणकारी संगमयुग में

→ कल्याणकारी बाप का सदा साथ है..

- कभी भी अकल्याण हो ही नहीं सकता है..

→ सदा ड्रामा के हर प्वाइंट की अनुभवी बन

- बुरे में भी बुराई को न देख
- अच्छाई को ही देख रही हूँ..

→ नालेज और अनुभव की अथार्टी से

- सदा एक रस, अचल और अडोल रहती हूँ..

➳ _ ➳ बाबा ने मुझे कितने प्रकार की अथार्टीज दी हैं-

→ वर्ल्ड आलमाइटी की अथार्टी

→ वर्ल्ड के आदि मध्य अन्त के नालेज की अथार्टी

→ ब्राह्मण धर्म की अथार्टी

→ सर्वश्रेष्ठ कर्म के प्रैक्टिकल जीवन की अथार्टी

→ विश्व के अखण्ड राज्य के अधिकार की अथार्टी

→ भक्तों के पूज्य की अथार्टी

→ सबसे बड़ी अथार्टी- बाप मुझे नमस्ते करते हैं..

→ सदा इसी नशे में रहती हूँ

- मैं कितनी बड़ी अथार्टी हूँ..